उठ जीव जाग

(निहकलंक हरि शब्द भंडार विचों)

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

✪ ✪ ✪ ✪ ✪

उठ जीव जाग जाग जाग, प्रगटे पारब्रह्म अचुत। उठ जीव जाग जाग जाग, प्रभ मिलणे दी आई रुत्त। उठ जीव जाग जाग जाग, साचा नाता प्रभ जिउँ पिता पुत्त। उठ जीव जाग जाग जाग, झूठा संसार अन्त होए ना मित। उठ जीव जाग जाग जाग, कलिजुग चल्लया विछड़ जाए ना कित। उठ जीव जाग जाग जाग, ईशर प्रगटे ना किसे वार ना थित। उठ जीव जाग जाग जाग, कर दरस महाराज शेर सिँघ आत्म नित। (२६ चेत २००८ बि)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪

उठ जीव जाग, प्रभ भए प्रकाशे। कलिजुग लै अवतार, करे बन्द खलासे । देवे दरस प्रभ अगम्म अपार, आत्म दे धरवासे। सो जन होए सुघड़ सुजान, मिल प्रभ समरथ अबिनाशे। कलिजुग लए अवतार, महाराज शेर सिँघ निहकलंक शाहो शाबाशे। (१७ हाढ़ २००८ बि)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪

उठ जीव जाग, शब्द रसना गाए। उठ जीव जाग, प्रभ दरस दिखाए। उठ जीव जाग, निहकलंक जोत सरूप घर में आए। उठ जीव जाग, चरनीं लाग गेड़ चुरासी प्रभ दे कटाए। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ जोत सरूप निज घर आए। (१७ हाढ़ २००८ बि)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪

उठ जीव जाग, कलिजुग जीव विहाया। कलिजुग जामा धार, घनकपुरी भाग लगाया। उठ जीव जाग पूरन होए भाग, जोत सरूपी प्रभ दिस आया। उठ जीव जाग वज्जे धुन नाद, सोहँ साचा शब्द सुणाया। उठ जीव जाग मिटे विवाद, खोल्ह किवाड़ प्रभ दरस दिखाया। उठ जीव जाग प्रभ रक्खे लाज, निरहारी निरवैर प्रभ जोत सरूप प्रभ जीव विच्च सिख देह समाया। उठ जीव जाग, प्रभ अबिनाशी घर में पाया। सोहँ शब्द वरते साचा पहली माघ, समरथ पुरख सति बचन लिखाया। निहकलंक सर्ब सृष्ट हत्थ तेरे वाग, करे सो जो तेरे मन भाया। महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, जोत सरूपी कलिजुग खेल कराया। (१७ हाढ़ २००८ बि)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪

उठ जीव जाग, क्यों वक्त विहाया। उठ जीव जाग, वेला प्रभ मिलण दा आया। उठ जीव जाग, प्रभ चार कुण्ट अगन जोत जलाया। उठ जीव जाग, बेमुखां हाहाकार मचाया। उठ जीव जाग, क्यों जगत शरमाया। उठ जीव जाग, प्रभ लाहे कलिजुग माया । उठ जीव जाग, वेला अन्त अन्त दा आया। उठ जीव जाग, थिर घर वासी विच्च मात दे आया। उठ जीव जाग, प्रभ पड़ शरनाया। उठ जीव जाग, रैण सौं के वक्त लंघाया। उठ जीव जाग, जुग चौथे निहकलंक जग आया। उठ जीव जाग, क्यों सोए भाग आपणा आप भुलाया। उठ जीव जाग, निहकलंक हत्थ पकड़ी सृष्ट वाग, क्यों साचा प्रभ भुलाया। उठ गुरमुख जाग, प्रभ साचा शब्द सुणावे राग, बेमुखां कलिजुग सवाया। उठ जीव जाग, सुण शब्द अहिलाद, प्रभ कलिजुग नाद वजाया। उठ जीव जाग, वेख की वरते ब्रह्माद, प्रभ तीन लोक उलटाया। मिटे जन्म बिआध, महाराज शेर सिँघ निहकलंक दर आया। (६सावण २००८ बि)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪

उठ जीव जाग, वक्त वहाया। उठ जीव जाग, पतिपरमेशवर घर में पाया। उठ जीव जाग, निहकलंक कल पाई माया। उठ जीव जाग, कलिजुग वेला प्रभ मिलण दा आया। उठ जीव जाग, भुल्ल भुल्ल क्यों जन्म गवाया। उठ जीव जाग, जोत सरूपी प्रभ कलिजुग खेल रचाया। उठ जीव जाग, झूठे धंदे लाग क्यों माण वधाया। उठ जीव जाग, होण पूरन भाग, लाग प्रभ सरनाया। उठ जीव जाग, अनहद शब्द प्रभ सुणावे राग, सोहँ शब्द ढोल वजाया। उठ जीव जाग, चरन लाग, मानस जन्म क्यों जगत गवाया। उठ जीव जाग, साचे प्रभ हत्थ सृष्ट वाग, कलिजुग बेड़ा पकड़ रुड़ाया। महाराज शेर सिँघ शब्द सुणावे अनराग, आत्म धुन विच देह वजाया।

उठ जीव जाग, जगत विकारी। उठ जीव जाग, कलिजुग माया धारी। उठ जीव जाग, लाग प्रभ चरन दवारी। उठ जीव जाग, छड्ड झूठे धंदे जगत संसारी। उठ जीव जाग, दिसे सभ जगत पसारी। उठ जीव जाग, कलिजुग प्रगटे निहकलंक अवतारी। उठ

जीव जाग, चरन लाग, देवे दरस कृष्न मुरारी। उठ जीव जाग, कलिजुग आया महाराज शेर सिँघ नरायण नर अवतारी।

जाग जाग जाग, प्रभ आण जगाया। राग राग राग, सोहँ साचा राग सुणाया। लाग लाग लाग, जीव प्रभ अबिनाशी कल विच्च आया। भाग भाग भाग, प्रभ बेमुख दर ते भाग, सोहँ शब्द प्रभ बाण लगाया। नास नास नास, बेमुख कलिजुग जीव नास, मदि मास आहार बणाया। आग आग आग, कलिजुग जोत लगाई आग, कलिजुग अन्तम खेल रचाया। नाग नाग नाग, बाशक तशक तेरी सेज नाग, नैण मुधार उपर आसण लाया। जाग जाग जाग, कलिजुग जीव जाग, निहकलंक जामा धार कलिजुग आया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत सरूपी कलिजुग खेल रचाया। (१५ सावण २००८ बि)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪

उठ जीव जाग, प्रभ कल विच्च आया। उठ जीव जाग, वेला अन्त प्रभ अन्त कराया। उठ जीव जाग, क्यों माया भरम भुलाया। उठ जीव जाग, क्यों आपणा मूल गवाया। उठ जीव जाग, कर दरस प्रभ रघुराया। उठ जीव जाग, आत्म त्याग मदिरा मास जो आहार बणाया। उठ जीव जाग, प्रभ चरनी लाग कर दरस आत्म सुख पाया। रागन राग, प्रभ सोहँ साचा राग उपजाया। उठ जीव जाग, पहली माघ प्रभ साचा शब्द सुणाया। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप जगत पित आया।

उठ जीव जाग, प्रभ भए किरपाला। उठ जीव जाग, कर दरस प्रभ दीन दयाला। उठ जीव जाग, जगत पित आप रखवाला। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ कर दरस, आत्म जोत जगाए जिउँ ज्वाला। (१ माघ २००८ बि)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪

जीव जाग जाग, प्रभ जामा धारे। जीव जाग जाग, प्रभ जोत अकारे। जीव जाग जाग, मातलोक आया नैण मुंधारे। जीव जाग जाग, प्रभ साचा आए दर दरबारे। जीव जाग जाग, आत्म जोत जगाए झूठे महल्ल मुनारे। जीव जाग जाग, कर दरस प्रभ कृष्न मुरारे। उठ जीव जाग, चल आ गुर चरन दवारे। उठ जीव जाग, प्रभ साचा लाए भाग भर दए भंडारे। उठ जीव जाग, प्रभ साचा कल काज सवारे। उठ जीव जाग, प्रभ उपजावे अनहद धुन सच्ची सरकारे। उठ जीव जाग, आत्म बुझा तृष्ना आग, रसना सोहँ जै जै जैकारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म देवे जोत अधारे।

उठ जीव जाग, प्रभ दरस कर। उठ जीव जाग, प्रभ चरन लाग जगत तर। उठ जीव जाग, रसना जप साचा नाम हरि। जोत सरूपी जोत प्रभ, प्रभ साचे दी सरनी पर।

उठ जीव जाग, प्रभ दवाए साचा घर वर। उठ जीव जाग, मातलोक प्रगटे अवतार नर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मूल ना डर।

उठ जीव जाग, प्रभ भए अनन्दा। उठ जीव जाग, प्रभ उपजावे आत्म परमानंदा। उठ जीव जाग, कलिजुग छोड़ झूठा धन्दा। उठ जीव जाग, रसना त्याग मदिरा मास गंदा। उठ जीव जाग, प्रभ अबिनाशी सद बख़शिंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत सिर हत्थ रखंदा।

उठ जीव जाग, प्रभ शब्द जणाए। उठ जीव जाग, प्रभ साचा सरन लगाए। उठ जीव जाग, मानस जन्म सुफल कराए। उठ जीव जाग, प्रभ साचे दी साची जोत मिलाए। उठ जीव जाग, भगत भगवान इक्क हो जाए। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सिर तेरे हत्थ टिकाए।

उठ जीव जाग, प्रभ दर वेख। उठ जीव जाग, प्रभ अबिनाशी कीआ भेख। उठ जीव जाग, प्रभ साचा लिख जाए लेख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जीव जंतां रिहा वेख। सो जागे जिस आप जगाए। कलिजुग जीव सार ना पाए। गुरमुख साचे प्रभ सरन लगाए। ब्रह्म ज्ञानीआं प्रभ ब्रह्म ज्ञान दवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे एका चरन ध्यान रखाए। (२२ माघ २००८ बि)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪

उठ जीव जाग प्रभ दया कमाई। उठ जीव जाग, प्रभ भाग लगाई। उठ जीव जाग, प्रभ आत्म जाग लगाई। उठ जीव जाग, प्रभ साचा राग सुणाएं। उठ जीव जाग, भिन्न नड़ी रैण प्रभ आप सुहाई। उठ जीव जाग, पंचम जेठ मातलोक प्रभ जामा पाई। उठ जीव जाग, प्रभ खेल रचाई। उठ जीव जाग, खण्ड ब्रह्मण्ड प्रभ उलटाई। उठ जीव जाग, नैण मुंधार विच्च मात दे आई। उठ जीव जाग, बाशक सेज प्रभ सुंञ कराई। उठ जीव जाग, जोत सरूपी कर अकार विच्च मात प्रगटाई। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ जोत मात प्रगटाई।

उठ जीव जाग, निहकलंक घनकपुरी कल जामा पाई। उठ जीव जाग, प्रभ वक्त सुहाया। उठ जीव जाग, प्रभ साचे कल सच कर्म कमाया। उठ जीव जाग, प्रभ सचे दी चरनी लाग, दर घर साचे प्रभ साचा आया । उठ जीव जाग, देही दुखड़े जाइण भाग, सोहँ साचा रसना गाया। उठ जीव जाग, प्रभ हँस बणाए काग, चरन धूड़ मस्तक लाया। उठ जीव जाग, प्रभ अनहद अनाहद उपजावे साचा राग, रसना जप जप जीव आत्म धुन उपजाया। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ मातलोक विच्च जामा पाया।

उठ जीव जाग प्रभ भए दयाला। उठ जीव जाग, प्रभ सर्ब करे प्रितपाला। उठ जीव जाग, देवे दरस गुर गोपाला। उठ जीव जाग, मिटाए तिरख पी अमृत भर प्याला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ होए आप रखवाला।

उठ जीव जाग, सच कर्म कर। उठ जीव जाग, प्रभ सरन पर। उठ जीव जाग, मात आया प्रभ धरनी धर। उठ जीव जाग, कलिजुग मूल ना डर। उठ जीव जाग, अमृत नहाओ साचा सर। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ जाए भंडारे भर।

उठ जीव जाग, रैण विहाए। उठ जीव जाग, गुर लेख लिखवाए। उठ जीव जाग, गुरमुख साचे वेख प्रभ सरन लगाए। उठ जीव वेख प्रभ साचे का साचा भेख, भुल्ल भुल्ल क्यों वक्त गवाए। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ मेख लगाए।

उठ जीव जाग, मिटे रोग। उठ जीव जाग, प्रभ चुकाए आत्म सोग। उठ जीव जाग, सोहँ देवे प्रभ साचा जोग। उठ जीव जाग, साचा प्रभ साचा रस भोग। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म देवे साचा जोग।

उठे जीव प्रभ आप उठाए। जन्म जन्म दे रुठड़े प्रभ आण मनाए। मात गरभ विच्च उलटे रिहा लटकाए। कलिजुग जीव होए झूठे, प्रभ ठूठे हत्थ फड़ाए। गुरमुख साचे रंग अनूठे, प्रभ मुख चवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिर आपणा हत्थ टिकाए। (६ जेठ २००६ बि)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪

उठ जीव जाग प्रभ जोत जगाए। उठ जीव जाग प्रभ विच्च मात दे आए। उठ जीव जाग, साचा नात प्रभ चरन रखाए। उठ जीव जाग, प्रभ चरन लाग, ना लागे दाग़, अन्तम अन्त पकड़े तेरी वाग, निहकलंक होए सहाए।

उठ जीव जाग, वेला सच। उठ जीव जाग, प्रभ भगत सुहेला सच। उठ जीव जाग, प्रभ मिलण दा वेला सच। उठ जीव जाग, अचरज खेल पारब्रह्म खेला सच। उठ जीव जाग, प्रभ साचे दी सरनी लाग, निहकलंक आपणा आप कराए मेला सच।

उठ जीव जाग, प्रभ सच मिलावा। उठ जीव जाग, प्रभ दर आए जोत प्रगटाए निहकलंक नाउँ रखाए, साचा रक्ख प्रभ मिलण दा दाअवा। उठ जीव जाग, प्रभ सोहँ लाए जाग, साचा नाउँ सद रसना गावा।

उठ जीव जाग, निहकलंक जोत प्रगटाई। भेख वटाई रेख कल मिटाई। सतिजुग

लेख रिहा लिखाई। सोहँ साची नईआ विच्च मात चलाई। चार वरन कराए भैणां भाई। निहकलंक तेरी सच वड्डिआई। सतिजुग साची नींह रखाई। सोहँ सच प्रभ आप बिजाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक विच्च मात देवे साची दात, सोहँ वड करामात, आत्म मार झात, जोत सरूपी जोत प्रभ गुरमुख तेरे हिरदे रिहा समाई।

उठ जीव जाग, कल जन्म गवाया। उठ जीव जाग, क्यों भरम भुलाया। उठ जीव जाग, आपणा आप क्यों माया ममता विच्च रुलाया। उठ जीव जाग, हउमे हंगता रोग लगाया। उठ जीव जाग, प्रभ साचा सच लगाए अंगता, आत्म रंग मजीठ चढ़ाए, बेमुख दर फिरे मंगता, साचा नाम झोली किसे ना पाया। उठ जीव जाग, कलिजुग जागण तेरे भाग, रल साची संगता, निहकलंक होए सहाया। कर दरस गुरसिख साचा पार लंघाए, जिस जन प्रभ साचा दया कमाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त साध सन्त बणाए बणत साचा कन्त होए आप सहाया।

उठ जीव जाग, मंग सच्ची मंग। उठ जीव जाग, प्रभ साचे दे लाग अंग। उठ जीव जाग, आत्म धो दाग़, प्रभ गवाए भुक्ख नंग। उठ जीव जाग, अनहद सुण साचा राग, प्रभ दर आए मूल ना संग। सोहँ लगाए प्रभ आत्म अवाज़, आपणे रंग प्रभ जाए रंग। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरसिख साचे सदा सहाई अंग संग। (१५ सावण २००६ बि)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪

उठ जीव जाग, प्रभ साचे दरस पा, प्रभ अबिनाशी घर मह पाया। महाराज शेर सिँघ साचा राग सोहँ डंक चलाया। उठ जीव जाग, रसना जप उत्तम होवे मुख। उठ जीव जाग, कर दरस प्रभ मिले जगत सुख। उठ जीव जाग, कर दरस प्रभ उतरे आत्म भुक्ख। उठ जीव जाग, प्रभ धोवे दाग़, सुफल कराए कुक्ख। महाराज शेर सिँघ सोहँ शब्द लाए जुग गुरसिख सभ जग उत्तम मनुख। (६ जेठ २००८ बि)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪

उठ सिख सोया जाग। हँस बणयो होइओ काग। अन्तम क्यों होए माड़े भाग। आपणे घर आपे क्यों लगाई आग। कलिजुग माया डस्सणी नाग। बिन प्रभ साचे तेरी कोई ना पकड़े वाग। उठ सिख जाग, क्यों होया बाल। उठ सिख जाग, आपणा आप संभाल। उठ सिख जाग, साचा बचन सति कर पाल। उठ सिख जाग, पाप कुठाली विच्च आपणी देह ना गाल। उठ सिख जाग, क्यों आत्म गवाया साचा धन माल। उठ सिख जाग, विषे विकारां क्यों होया बेहाल। उठ सिख जाग, मूर्ख मुगध गवारां संगत निभे ना नाल। महाराज शेर सिँघ पकड़ पछाड़े विच्च उजाड़े होए दो फाड़े आपणा वेला आप संभाल।

उठ सिख जाग, काया कच्च। उठ सिख जाग, अगन जोत विच्च जाए मच्च। उठ सिख जाग, वेला अन्त जाए बच। उठ सिख जाग, धीआं पुत्तर पाप ना जाए पच। उठ सिख जाग, आपणा कीआ आप बख्शाए प्रभ फेर वसाए सच। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, झूठा ठूठा आप भन्नाए देही काया कच्च।

उठ जीव जाग, प्रभ दर आ। उठ सिख जाग, बुझा आग प्रभ दर्शन पा। उठ सिख धो दाग, क्यों रहयो कलंक लगा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे देही छुडा। आओ दर ना जाओ डर, वसाओ घर आपणी भुल्ल बख्शा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पत्तत पापीआं आपे मत दे लए समझा। (२३ सावण २००६ बि)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪

कलिजुग जीव जाग, प्रभ आप जगाए । कलिजुग जीव जाग, प्रभ चरन लगाए। कलिजुग जीव जाग, प्रभ आत्म पाप धवाए। कलिजुग जीव जाग, प्रभ साचा राग सुणाए। कलिजुग जीव जाग, प्रभ आत्म आग बुझाए। कलिजुग जीव जाग, प्रभ साचा दर ते आए। कलिजुग जीव जाग, निहकलंक कल जामा पाए। कलिजुग जीव जाग, प्रभ साचा डंक वजाए। कलिजुग जीव जाग, प्रभ राओ रंक इक्क कराए। कलिजुग जीव जाग, प्रभ आत्म शंक मिटाए। कलिजुग जीव जाग, प्रभ चरन लाग पूरन भाग, प्रभ साचा दरस दिखाए। उठ जीव जाग, प्रभ दरस दिखाए। जो जन रहे तरस, प्रभ आत्म तृखा मिटाए। उठ जीव जाग, प्रभ आत्म भुक्ख गवाए। उठ जीव जाग, प्रभ सुक्के रुखड़े हरे कराए। उठ जीव जाग, बाल अंञाणे कुक्खड़े प्रभ सोहँ शब्द जणाए। उजल कराए मुखड़े, जो जन सरनाई आए। उठ जीव जाग, प्रभ मिटाए दुखड़े सोहँ रसना गाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पाए।

उठ जीव जाग, साचा सुण राग, आत्म धो दाग़, तृखा तृष्ना बुझा आग, प्रभ हँस बणाए काग, आप पकड़े तेरी वाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण रैण दिवस सदा सदा सद रिहा जाग।

उठ जीव जाग, प्रभ आ दर। उठ जीव जाग मल्ल साचा घर। उठ जीव जाग, देवे नाम साचा वर। उठ जीव जाग, देवे थां थिर घर। उठ जीव जाग, चरन लाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी साचा हरि।

उठ जीव जाग आत्म रंग। उठ जीव जाग प्रभ साचे दा साचा संग। उठ जीव जाग, अमृत झिरना झिराए प्रभ आत्म गंग। उठ जीव जाग, अन्तकाल कल दर आए, मूल ना संग। उठ जीव जाग, अमृत झिरना झिराए साचा दरस दान दर मंग । उठ जीव जाग, वेला अन्त बण साचा सन्त देवे वड्डिआई विच्च जीव जंत, जिन बणाई तेरी

बणत, साचा दरस दान दर मंग । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई सदा अंग संग।

कलिजुग जीव उठ उठ उठ क्यों सोया । कलिजुग जीव रुठ रुठ रुठ क्यों प्रभ अबिनाशी खोइआ। कलिजुग जीव प्रभ साचा तुठ तुठ तुठ दर दवार आण खलोइआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत निरञ्जण भय भञ्जण आदि अन्त सदा नवां नरोइआ।

कलिजुग जीव उठ जाग, प्रभ दया धारी। कलिजुग जीव उठ जाग, ना होए खुआरी। कलिजुग जीव उठ जाग, साचा सुण कन्न राग, दिवस रैण रहे खुमारी। कलिजुग जीव उठ जाग, साचा बण वणज वपारी। कलिजुग जीव उठ जाग, सोहँ खट आत्म लाल, ना पासा दिसे हारी । कलिजुग जीव उठ जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जोत प्रगटाई। वज्जी वधाई सुणे लोकाई, दिस ना आई, जोत सरूप गुरसिख समाई। आवण जावण खेल रचाई, पत्तत पावन आप अखवाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब थाईं होए आप सहई।

उठ जीव जाग, कलजग मूढ़। उठ जीव जाग, प्रभ देवे चरन धूड़। उठ जीव जाग, प्रभ आत्म चढ़ाए रंग गूड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे देवे आपणी चरन धूड़।

चरन धूड़ मस्तक लाओ। पूरब लहणा प्रभ दर पाओ। सोहँ गैहणा आत्म कंठ चढ़ाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे विच्चों पाओ।

सोहँ कहणा साचा गैहणा । सोहँ कहणा प्रभ खुलावे तीजे नैणां। गुरमुख साचे अन्तकाल कल, निहकलंक तेरे दर ते बहणा। बेमुख कलिजुग जीवां भाणा प्रभ साचे दा सिर ते सहणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वहाए वहिंदे वहणा।

उठ जीव जाग कल, प्रभ लाज रखाए। उठ जीव जाग कल, प्रभ साजन साज आप अखवाए। उठ जीव जाग कल, प्रभ राजन राज अखवाए। उठ जीव जाग कल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे रंग रंगाए।

जीव जगंता प्रभ भगवन्ता। जोत जगाए साधन सन्ता। कलिजुग जीवां माया पाए बेअन्ता। ना होए मिलावा साचे कन्ता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति तेरी वड्डिआई, भेव कोई ना पाई, प्रभ साचा आदिन अन्ता। (२४ सावण २००६ बि)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪
✪ ✪ ✪ ✪ ✪

कलिजुग जीव जाग, भरम ना भुल्ल। कलिजुग जीव जाग, माया विच्च ना रुल। कलिजुग जीव जाग, सच भंडारा गिआ खुल्ल। कलिजुग जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ लगाए भाग, देवे नाम अनमुल।

कलिजुग जीव जाग, सच संदेश। कलिजुग जीव जाग, जोत प्रगटाई प्रभ माझे देस। कलिजुग जीव जाग, प्रभ अबिनाशी कल आया जोत सरूपी कर के भेस। कलिजुग जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रभ साचे को सदा आदेस।

कलिजुग जीव जाग, क्यों होए भाग मंद। कलिजुग जीव जाग, आत्म होई पापां कंध। कलिजुग जीव जाग, आत्म दवार होया बन्द। कलिजुग जीव जाग, प्रभ साचा सुणाए राग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दान दर मंग।

कलिजुग जीव जाग, वक्त सुहञ्जणा। कलिजुग जीव जाग, कलिजुग जोत प्रगटाए नरायण निरञ्जणा। कलिजुग जीव जाग, बण साचा साक सैण सज्जणा। कलिजुग जीव जाग, भाण्डा काचा अन्तकाल कल भज्जणा। कलिजुग जीव जाग, माया नाल ना किसे रज्जणा। कलिजुग जीव जाग, प्रभ साचे अन्त तेरा परदा कज्जणा। कलिजुग जीव जाग, वेला अन्तकाल गोला मौत सिर ते वज्जणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पी अमृत दर ते रज्जणा।

कलिजुग जीव जाग, छड्ड भरम भुलेखा। उठ जीव जाग, प्रभ चुकाए पिछला लेखा। उठ जीव जाग, कल रहे ना वेखी वेखा। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए औलीए शेखा।

उठ जीव जाग, अन्त अखीर। उठ जीव जाग, चार कुण्ट होए वहीर। उठ जीव जाग, सोहँ शब्द चलाए तीर। उठ जीव जाग, आप मेट मिटाए औलीए प्रभ साचा पीर फकीर। उठ जीव जाग, कोई ना देवे धीर दस्तगीर। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप खिचाए अठ्ठ सट्ठ तीर्थ नीर।

उठ जीव जाग, सुण साचा राग। उठ जीव जाग, धो पापां दाग। उठ जीव जाग, बुझा तृष्ना आग। उठ जीव जाग, बण हँस काग। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग लगाया पहली माघ।

उठ जीव जाग, कल अन्ध अन्धघोर। उठ जीव जाग, पंचां लुट्टया घर तेरा बण चोर। उठ जीव जाग, ना बण हराम खोर। उठ जीव जाग, प्रभ अबिनाशी देवे शब्द घनघोर। उठ जीव जाग, चरन प्रीती लै जोड़।

उठ जीव जाग, क्यों मुख भवाया। उठ जीव जाग, क्यों दुःख उठाया। उठ जीव जाग, क्यों सुख गवाया। उठ जीव जाग, क्यों मुख छुपाया। उठ जीव जाग, क्यों आत्म तृष्ना भुक्ख वधाया। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कल जामा पाया।

उठ जीव जाग, जगत अन्धेर। उठ जीव जाग, एका अगन लग्गे चार चुफेर। उठ जीव जाग, दुष्ट दुराचार मारे घेर। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे मार मारे कराए ढेर।

उठ जीव जाग, ढठ्ठे ढेरी। उठ जीव जाग, मातलोक ना पावे फेरी। उठ जीव जाग, वेला अन्त ना लग्गे देरी। उठ जीव जाग, एका शब्द झुलाए जगत अन्धेरी। शब्द अन्धेरी जाए झुल्ल। सृष्ट सबाई जाए रुल। गुरमुख साचे सन्त जन, प्रभ दर पाइण अनमुल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द अन्धेर जगत जाए झुल्ल। (५ जेठ २०१० बि)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪

उठ जीव जाग, क्यों कलिजुग भुल्लया। उठ जीव जाग, क्यों कलिजुग माया विच्च रुलया। उठ जीव जाग, क्यों झूठे तोल तुलया। उठ जीव जाग, सच दवार मात खुलूया। उठ जीव जाग, अमृत आत्म अजे ना डुलूया। उठ जीव जाग कलिजुग वेला अन्तम आ गिआ, जाए पैहले बुलूया । उठ जीव जाग, हरि साचा शब्द लिखा गिआ, भाग लगाए आपणी कुलया। उठ जीव जाग, अन्तम अन्त कल करावणा, किसे अग्गे ना दिसे चुलूया। उठ जीव जाग, भरम भुलेखे फिरे ऐवें भुलया, उठ जीव जाग महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप तुलाए साचे तोलया।

उठ जीव जाग, जगत अन्धेरा। उठ जीव जाग, ना कोई दिसे संञ सवेरा। उठ जीव जाग, हरि आप चुकाए तेरा मेरा। उठ जीव जाग, प्रभ कटाए चुरासी गेड़ा। उठ जीव जाग, कलिजुग झूठा झेड़ा। उठ जीव जाग, प्रभ शब्द सरूपी बंनूे बेड़ा। उठ जीव जाग, गुर बिन पार लंघावे केहड़ा। उठ जीव जाग, धुर दरगाहों ना जाए फेड़ा। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिोंघ विष्नूं भगवान, आपे पाए शब्द सरूपी आत्म जेड़ा।

उठ जीव जाग, वक्त अखीर। उठ जीव जाग, क्यों टुट्टी आत्म धीर। उठ जीव जाग, पी अमृत साचा सीर। उठ जीव जाग, ना होए सहाई कोई पीर फकीर। उठ जीव जाग, प्रभ मिटाए औलीए दस्तगीर। उठ जीव जाग, राओ रंकां लथ्थे चीर। उठ जीव जाग, साचा शब्द चलाया तीर। उठ जीव जाग, चार कुण्ट ना देवे कोई किसे धीर। उठ जीव जाग, आप मिटाए औलीए पीर। उठ जीव जाग, किसे हत्थ ना आवे नीर। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे देवे शब्द धीर।

उठ जीव जाग, वक्त विचारना। उठ जीव जाग, मानस जन्म ना कलिजुग हारना। उठ जीव जाग, हरि देवे शब्द उधारना। उठ जीव जाग, साचा नाम रसन उच्चारना। उठ जीव जाग, हउमे रोग सर्ब निवारना। उठ जीव जाग, साचा जोग गुर दर कमावणा। उठ जीव जाग, आत्म भोग सच लगावणा। उठ जीव जाग, चिन्ता सोग सर्ब मिटावणा। उठ जीव जाग, दरस अमोघ हरि आप दिखावणा। उठ जीव जाग, हउमे रोग सर्ब गवावणा। उठ जीव जाग, साचा जोग हरि दवावणा। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी पूर कराए भावना।

उठ जीव जाग, हरि वक्त सुहाया। उठ जीव जाग, प्रभ अबिनाशी विच्च मात दे फेरा पाया। उठ जीव जाग, सोहँ देवे साची दात, हरि साचा खेल रचाया। उठ जीव जाग, प्रभ पढ़ाए इक्क जमात, दूजा भेव सर्ब चुकाया। उठ जीव जाग, प्रभ आप मिटाए आत्म अन्धेर, सुरत एका नाम ज्ञान दवाया। उठ जीव जाग, आत्म वेख मार झात, प्रभ अबिनाशी तेरे विच्च समाया। उठ जीव जाग, प्रभ अबिनाशी लाए आपणे लेखे, क्यों आपणा मूल गवाया। उठ जीव जाग, प्रभ अबिनाशी नेत्र पेखे, आत्म देवे जोत सवाया। उठ जीव जाग, प्रभ सोहँ देवे चोग चुगाया। उठ जीव जाग, क्यों हंगता रोग वधाया। उठ जीव जाग, क्यों दर दर फिराया। उठ जीव जाग, प्रभ साचे सच दवार आप खुल्ह़ाया। उठ जीव जाग, गुरसिखां कर प्यार इक्क साचा नाम दान झोली पाया। उठ जीव जाग, एका बख्शे चरन प्यार, चरन प्रीती देवे तोड़ निभाया । उठ जीव जाग, चरन धूड़ कर इशनान, भाण्डा भरम दे भन्नाया। उठ जीव जाग, आत्म वज्जे साचा बाण, बज़र कपाटी चीर चिराया। उठ जीव जाग, साचा शब्द विके प्रभ हाटी, मुल्ल कोई ना लाया। उठ जीव जाग, काया झूठी माटी अन्त देवे ख़ाक रलाया। उठ जीव जाग, प्रभ अबिनाशी आप चढ़ावे औखी घाटी, प्रभ दाता वड बली बलवान महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे रंग रंगाया।

उठ जीव जाग, कलिजुग अन्तम राह अव्वलड़ा। उठ जीव जाग, वेले अन्त दर दवारे हरि खवलड़ा। उठ जीव जाग तेरा भारा होवे पलड़ा। उठ जीव जाग, क्यों बेमुखां संग रलड़ा। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दिसे राह सुखवल्लड़ा।

उठ जीव जाग, हरि मार्ग लाया। उठ जीव जाग, सारंग धर बीठला जोत जगाया। उठ जीव जाग, रंग रंगीन माधव विच्च मात दे आया। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी आत्म जोती दए जगाया।

उठ जीव जाग, हरि दया धारे। उठ जीव जाग, प्रभ जोत जगाए तेरी काया महल मुनारे। उठ जीव जाग, क्यों भुल्ले जीव कल गवारे। उठ जीव जाग, क्यों रुल्ले विच्च संसारे। उठ जीव जाग, पूरे तोल तुलो मानस जन्म हरि सुधारे। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा पार उतारे।

उठ जीव जाग, क्यों माड़े होए भाग। एका शब्द उपजाए साची धुन राग। एका जोत जगाए तेरी आत्म मिटाए सर्ब विवाद। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण सद अराध।

उठ जीव जाग, कर सच विहारा। उठ जीव जाग, प्रभ साचा देवे नाम अपारा। उठ जीव जाग, मानस जन्म हरि कल सवारा। उठ जीव जाग, लक्ख चुरासी हरि गेड़ निवारा। उठ जीव जाग, जम की फासी हरि कटारा । उठ जीव जाग, आप बहाए दर दवार, जो जन करे चरन निमस्कारा। उठ जीव जाग, वेला अन्त क्यों बाजी हारा। उठ जीव जाग, प्रभ आप बंधाए जगत साची धारा। उठ जीव जाग, जोत सरूपी करे खेल अपर अपारा। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग लाए साचा इक्क दरबारा।

उठ जीव जाग, हरि जन्म सवारे। उठ जीव जाग, प्रभ अबिनाशी चरन निमस्कारे। उठ जीव जाग, आत्म दर हरि आप खुल्लारे। उठ जीव जाग, साची जोत जगाए तेरे काया महिल मुनारे। उठ जीव जाग, साचा मंग इक्क दवारे। उठ जीव जाग, सृष्ट सबाई रैण अंधिआरे। उठ जीव जाग, नाम निरञ्जण जोत अधारे।

उठ जीव जाग, सर्ब दुःख भय भंजन। उठ जीव जाग, प्रभ चरन निमस्कारे, सोहँ देवे साचा अंजन। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पी अमृत दर गुरमुख साचे जन।

उठ जीव जाग, अमृत रस पीओ। उठ जीव जाग, सोहँ सच आत्म साचा बीओ। उठ जीव जाग, प्रभ आप रखाई सतिजुग साची नीओ। उठ जीव जाग, प्रभ दर माण दवईओ। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची धीर धरईओ।

उठ जीव जाग, प्रभ साची धीर धराना। सच्चा चले एका तीर कमाना। उठ जीव जाग, प्रभ आप उठाए वड सूरबीर बली बलवाना। उठ जीव जाग, सृष्ट सबाई प्रभ वेखे रंग जिउँ दवापर कृष्ना काहना। उठ जीव जाग, प्रभ खेल रचाए सर्ब बंधाए हत्थ मौत गाना। उठ जीव जाग, आत्म हँकार दिसाए, शब्द कटार लगाए, बाहों पकड़ लयाए विच्च मैदाना। उठ जीव जाग, चीन रूसा शाह अबनूसया, एक तन पहनाए काली सूसया, ना कोई दिसे ईसा मूसया अन्तम दए मिटाए। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग दए मिटाए, सतिजुग दए लगाए, गुरमुख साचे आप उपजाए, सचे मार्ग लाए, सतिजुग साचे देवे सोहँ नाम निशानीआं। (१३ जेठ २०१० बि)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪
✪ ✪ ✪ ✪ ✪

उठ जीव जाग कलिजुग अंधिआरया । उठ जीव जाग, कर दरस निरंकारया। उठ जीव जाग, प्रभ चरनी लाग, आत्म छड्ड हंकारया। उठ जीव जाग, आत्म धो दाग, प्रभ अबिनाशी आपणी हत्थीं आपे लाह रिहा । उठ जीव जाग, सुण साचा राग, हउमे रोग गवा रिहा। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक साचा डंक वजा रिहा।

उठ जीव जाग, अन्त अखीर। उठ जीव जाग, अन्तम किसे ना देणी धीर। उठ जीव जाग, वज्जण वाला कलिजुग तीर। उठ जीव जाग, चारों कुण्ट किसे हत्थ ना आउणा नीर। उठ जीव जाग, ना कोई सहाई पीर फ़कीर। उठ जीव जाग, प्रभ साचे दी चरनी लाग, कढ्ढे हउमे पीड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे साची धीर।

उठ जीव जाग, अनभोल। उठ जीव जाग, प्रभ अबिनाशी इक्क सुणाए सच्चा बोल। उठ जीव जाग, साचे तोल रिहा हरि तोल । उठ जीव जाग, प्रभ अबिनाशी वसे तेरे आत्म कोल। उठ जीव जाग, प्रभ दूई द्वैती परदे देवे खोल्ह। उठ जीव जाग, साचा नां वजाए ढोल। उठ जीव जाग, मानस जन्म हत्थ ना आउणा, लक्ख चुरासी विच्चों अनमोल। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीती घोली घोल।

उठ जीव जाग, जगत हंकारया। उठ जीव जाग, निहकलंक कल जामा धारया। उठ जीव जाग, शब्द वज्जण वाला इक्क कटारया। उठ जीव जाग, सृष्ट सबाई होई अंधिआरया। उठ जीव जाग, सोहँ डण्डा कलिजुग तेरे सीस धरा रिहा। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई चीर दो फाड़ करा रिहा। (१४ चेत २०११ बि)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪

उठ उठ जाग, हरि भगत वणजारया। उठ उठ जाग, प्रभ खोल्ह सच दवारया। उठ उठ जाग, आत्म छड्ड झूठा हंकारया। उठ उठ जाग, नाता तुट्टे मोह माया विच संसारया। उठ उठ जाग, प्रभ चरनी जाणा छोह, खुल्ह भेव अपर अपारया। उठ उठ जाग, अवर ना दीसे को, एका जोत जगा रिहा। उठ उठ जाग, आत्म नीर साचा रो, जगत नीर क्यों वहा रिहा। उठ उठ जाग, धो आपणा पिछला दाग, जुग त्रेता फेर सुहा रिहा। उठ उठ जाग, प्रभ लाए काया भाग, दीपक जोती विच्च टिका रिहा। उठ उठ जाग, प्रभ हँस बणाए काग, सोहँ मोती चोग चुगा रिहा। उठ उठ जाग, प्रभ पकड़े तेरी वाग, साचा राह इक्क वखा रिहा। उठ उठ जाग, प्रभ मिल्या कन्त सुहाग, साची बणत मात बणा रिहा। उठ उठ जाग, सुण साचा राग, तुट्टे मुन खुल्ल्हे सुन्न, प्रभ साचा शब्द सुणा रिहा। उठ उठ जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत विछोड़ा आपणा आप गवा रिहा।

उठ उठ जाग, वक्त सुहेलड़ा। उठ उठ जाग, पूरन होए भाग प्रभ मिल्या इक्क इकेलड़ा। धुरदरगाही साचा माही नौजवाना बली बलवाना वड अभेदड़ा। शब्द रक्खे नाम मस्ताना, आत्म बंने हरि जी गाना, साचा बख्शे चरन ध्याना, आपे बणे सज्जण सुहेलड़ा। सोहँ शब्द पीणा खाणा, सदा जीणा नाउँ रखाना, तन पटकाया चोली आपणी आप सवाणा, प्रभ आप कराया आपणा महल्लड़ा। साचा शब्द रसना गाणा। छत्ती रागाँ माण गवाणा। बत्ती दन्दी हरि जी धिआणा। रसना होए ना गंदी, मदिरा मास मुख ना लाउणा। आत्म चढ़े चन्द नौंचन्दी, मस्सया अन्धेर आप मिटाउणा। खुशी कराए बन्द बन्दी, जगत विकार झूठी धंदी, आप मिटाए भरमी कंधी, नावें दर बन्द कराना। प्रभ अबिनाशी सद बख्शंदी, सोहँ शब्द पाए फंदी, लक्ख चुरासी होई अन्धी, गुरमुख साचे साचे धाम दसवें घर दस्से इक्क टिकाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि सन्त सुहेला इक्क इकेला, मिल्या मेल श्री भगवाना।

उठ उठ उठ जाग, शब्द वणजारया। उठ उठ उठ जाग, प्रभ साचा बख्शे चरन प्यारया। उठ उठ उठ जाग, हरि देवे चरन धूड़, जीव जंत मूढ़ चतुर सुघड़ सिआणया। उठ उठ उठ जाग, लक्ख चुरासी कूड़ो कूड़, साचा नूर इक्क भगवानया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे हरि दर दुलारे, आत्म देवे ब्रह्म ज्ञानया। (२६ पोह २०११ बि)